भगवत् कृपा

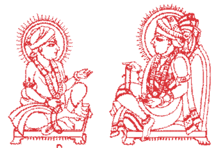

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 23 अंक : 4 | बुधवार, 26-4-2000 | वार्षिक चंदा : 50-00

4 मई..... प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जयंती !

4 मई.... प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जयंती का मंगलकारी दिन... अब की बार प.पू. स्वामिजी की जयंती 4 मई की शाम को साक्षात् प्रसादी का स्थान जहां फिलहाल गुरुहरि प.पू. पप्पाजी तो विराजते हैं ही; लेकिन वर्षों पहले इसी स्कूल के मैदान में वहां गुरुहरि योगीजी महाराज की जयंती मनाई गई थी, वहीं मनायेंगे.....

भगवान रखे संत अक्षरधाम से अपने साथ कोई एक अभिप्राय–योजना-अवतरित होने का कोई मक़सद लेकर धरती पर आते हैं और उनकी योजना में जो पूर्ण समर्पितभाव से साथ दे उसको वे निहाल-निहाल कर देते हैं......

गुरुहरि योगीजी महाराज ने समय की मांग को देखते हुए 51 पढ़े-लिखे युवकों को साधु बनाने का भव्य संकल्प किया। गुरुहरि योगीजी महाराज का विशेष अनुग्रह और अपने इस संकल्प को साकार रुप देने अपनी योजना का भागीदार बनाने जिन्हें पसंद किया–वे थे प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. हर्षदभाई दवे, प.पू. स्वामिजी, प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज, प.पू. महंतस्वामी, प.पू. साहेब, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी.... उनका यह संकल्प जो कि परम सत्य था, सनातन था वह आज अपने पूर्ण विकसित रूप में खिल उठा है।

संबंध में आये युवकों को गुरुहरि योगीजी महाराज सहज पूछते 'साधु बनोगे'? तब उनके वचन में समाई हुई सनातनता को जिस-जिसने पहचान लिया उसके संचित कर्म छूट गए और जो शरण में आ गए व उनके लिए याहोम होने तैयार हुए उन्होंने भवबंधन से छूटने का आनंद पाया।

आर्षदृष्टा पुरुष गुरुहरि योगीजी महाराज जानते थे कि जैसा नाम 'प्रभुदास' है, वैसे ही कल्याणकारी गुण पाने उसने यह जन्म धरा है। 'प्रभु का ही दास'–अन्य किसी का नहीं। गुरुहरि योगीजी महाराज ने दीक्षा देते हुए नाम दिया 'हरिप्रसाद' अर्थात् स्वयं साक्षात् श्रीहरि का प्रसाद बन कर संबंध में आने वाले को प्रभु का प्रसाद बांटे....

आज प.पू. स्वामिजी का एक भी पल या एक भी विचार ऐसा नहीं कि जो वे प्रसादरूप ना बांट रहे हों। उनकी एक भी क्रिया या एक भी शब्द ऐसा नहीं कि जिसमें दूसरों की प्रगति ना समाई हो। उनका एक भी भाव या एक भी दृष्टि ऐसी नहीं कि जो सभी को हितकारी या सुखकारी ना लगती हो। जो कोई उनमें लय और लीन होकर उन्हें याद करे, उसके समर्पण की भावना अंतर में बन जाते हैं। मगन होकर कोई उनकी मूर्ति याद करे तो, दिव्यभाव की गति अनंतगुणी बढ़ जाती है और समर्पण की भावना अन्तर में, पूर्णरूप से प्रगटती है। सर्वोपरि ब्राह्मीस्थिति पर होते हुए भी स्वयं दासत्व की पदवी पाकर 'भुल्का' की यात्रा पर सब को ले जा रहे हैं। आज अपने वर्तन, अपनी गरज, अपने संकल्प से मुक्तों को दासत्वभक्ति के पथ पर ले जा रहे हैं।

'हरिधाम' में प.पू. स्वामिजी की प्रत्यक्ष हाज़िरी में– आत्मीयता का, समर्पण का एक धोध बहता है और उनके वहां स्थूल रूप से हाज़िर ना होने पर संतों, बहनों, सहिष्णु भाईयों के हृदय की प्रार्थना सहित वर्तनधारा बहती है। 'स्वामी, तू ही-तू ही....' प्रत्येक का हृदय रटता रहता है और उसके फलस्वरूप सब दिखाई पड़ते हैं–जीवनमुक्त ! अहम् के आवरण टूट कर प्रत्यक्ष आत्मा का साक्षात्कार हो जाता है। परब्रह्म की

भक्ति करने की रीति-नीति तादृश होती है और ब्रह्मतत्त्व दिव्यरूप से रोम-रोम में प्रगट होता है।

बड़े संतों की जयंती मनाने पर सहज मन में प्रश्न उठता है कि रामनवमी मनाना ठीक है, जन्माष्टमी मनाना ठीक, भगवान महावीर की जयंती मना सकते हैं, ईसु की जयंती मना सकते हैं–परन्तु ऐसे संतों की जयंती क्यों मनाते होंगे? खूब स्वाभाविक है कि यह प्रश्न मन में आता ही है.... और एक मानसिक विरोध पैदा करता ही है। मन का स्वभाव ही है। प.पू. स्वामिजी कई बार कहते हैं कि मन का स्वभाव ही है जीव को दुःखी करना....

जैन संप्रदाय का नौकार मंत्र संत की ही महिमा गा रहा है। यह बता कर श्रीमद् राजचन्द्रजी ने जब संतों की खूब महिमा गाई तब जैन समाज में ही एक विरोध उत्पन्न हुआ। तब श्रीमद् राजचन्द्रजी ने जैन समाज के मुख्य-मुख्य संतों को बुला कर एक ही बात कही कि–**जीवन में किसी पारदर्शी पुरुष (संत) का होना जरूरी ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है।**

संत की महिमा की ऐसी कितनी बातें ईसु और मोहम्मद ने भी करी। श्रीजी महाराज ने तो वचनामृत के पन्ने-पन्ने पर संत की खूब महिमा गाई है...... भगवान कोई हुआ नहीं है, होने वाला भी नहीं है; परन्तु स्वयं श्रीजी महाराज ने ही 'संत वह मेरी मूर्ति' कह कर ऐसे परम भागवत् संत को आगे किया है और सारंगपुर 7 के वचनामृत में लिख दिया कि नैमिषारण्य क्षेत्र समान जिस साधु के दस इन्द्रियों और चार अंतःकरण प्रभु सन्मुख हैं–प्रभु के मुताबिक वो वर्तता है, प्रभु प्रेरित वर्तता है; ऐसे संत के सान्निध्य में उसे प्रसन्न करने के लिए तप, व्रत, योग, यज्ञ, दान जो कुछ भी करें उसका फल अनंत गुना मिलता है। इसलिए हम तो प्रभु के–भगवान स्वामिनारायण के इस वचन के आधार पर दिल से कहते हैं कि मानवजीवन में ऑक्सीजन–**हवा की जितनी जरूरत है उससे अधिक–बल्कि विशेष जरूरत है प्रभु के पवित्र संत की** !

एक बात खूब स्पष्टता से समझ कर रखें कि दुनिया मात्र के शास्त्रों को–कुरान, बाईबल, ग्रंथ साहेब, गीता, भागवत्, रामायण और हमारे वचनामृत व स्वामी की बातें आदि पुस्तकों को इकट्ठा करके पूजन करेंगे, दण्डवत करेंगे और मनन् चिंतन किया करेंगे–इससे **विवेकबुद्धि जागृत** हो पाएगी; परन्तु जीवन सहज नहीं बनेगा–प्रभुमय नहीं बनेगा, निर्दोष नहीं बनेगा। गंगा के किनारे सैकड़ों वर्ष तपस्या करेंगे–पर तब भी गंगा का वह निर्मल जल हमारे हृदय में निर्मलता नहीं प्रगटा सकेगा। निर्मलता प्रगटाने के लिए ऐसी निर्मल विभूति चाहिए और तीसरी बात–हरे राम, हरे कृष्ण का या गायत्री मंत्र का, यहां तक की स्वामिनारायण मंत्र का भी चाहे कितना ही भजन करेंगे उससे केवल संस्कार पड़ेंगे–पर वासना निर्मूल नहीं हो पाएगी–प्रकृति का परिवर्तन नहीं हो पाएगा।

जीव बेचारा स्थूल, सूक्ष्म, कारण, महाकारण के बंधनों में जकड़ा हुआ है। स्थूल दृष्टि से देखें तो भी अनंत प्रकार के मान हैं। हम कई बार बोलते हैं, तब हमें पता भी नहीं होता कि हम मान में से बोल रहे हैं या एक **विवेक दृष्टि** से बोल रहे हैं या प्रभु की तरफ नज़र रख कर बोल रहे हैं। ऐसी क्षुद्र है हमारी वृत्ति ! और..... जो व्यक्ति स्थूल दृष्टि से भी अपने मन को पहचान नहीं सकता हो, उसे सूक्ष्म में पड़ी हुई–खुद की बुद्धि शक्ति के मान का ख्याल तो कहां से आयेगा ? किसी के पास दस लाख रुपये होंगे तो उसे सहज ख्याल रहेगा कि मेरे पास इतनी संपत्ति है। इसी तरह किसी के पास खूब बुद्धि, शक्ति होगी तो उसके गरूर में ही वह 24 घंटे जीने वाला है। वह कहां से यह मानने वाला है कि यह बुद्धि व शक्ति मुझे प्रभु ने दी है और शायद कोई यह मान कर भी जीता हो कि यह बुद्धि-शक्ति सब कुछ भगवान ने दिया है, पर तब भी वह बिल्कुल सहज अवस्था वाला–निर्मानीभाव वाला जीवन नहीं जी पायेगा ! विवेक से बोलना अलग बात है और सहजता से जीना वह कोई अलग बात है।

तो, कारण और महाकारण के भावों से भी परे का अक्षरधाम का मंगलमय जीवन तो जिसके जीवन में सहजानंदी चेतना प्रगटी होगी–उसे ही सहज होगा, वर्ना जीवन सहज कहा ही नहीं जा सकता।

तो, हम में तो कई कितने ही दोष-स्वभाव पड़े हुए हैं। हमें इससे मुक्त होना है। हृदय में ठण्डक चाहिए। निर्दोष व पवित्र जीवन जीना है। प्रभु के लड़के सच में बनना है। तो, जो सचमुच प्रभु का लड़का हो उसे

–पहचानना पड़े,

–समझना पड़े,

–उसके गुणगान गाने पड़ें,

–उसका समागम करना पड़े।

तब जाकर, वच. म. 7 के मुताबिक ऐसे संत में रहे हुए प्रभु उसे बुद्धियोग देते हैं।

तप, त्याग, ज्ञान, वैराग्य वगैरह साधनों से इन्द्रियों–अंतःकरण में संस्कार जरूर पड़ते हैं और एक बल जरूरी मिलता है। पर, इससे इन्द्रियों–अंतःकरण कदापि **शुद्ध होकर प्रभुमय नहीं हो सकते। धरती पर प्रभु का जीवन तो वही जिवा सकता है जिसे प्रभु का संबंध हो।** मानों–जैसे हॉस्पिटल में सभी रोगों की दवा होती है, परन्तु तुम्हारे रोग को जांच कर दवाई लिखने वाला सही डॉक्टर यदि वहां नहीं होगा तो ? हॉस्पिटल चाहे कितना भी विशाल होगा, तब भी हमारे देह

के रोग के अनुरूप दवा हमें कौन देगा ? इसलिए सच्चे डॉक्टर समान संत–उसके साथ हमारा जितना और जैसा संबंध–उतना वो हमारा है ही। अगर संत के साथ हमारा संबंध 50 प्रतिशत खुल्ला और अंतरायरहित होगा तो वह संत इतना हमारा होगा ही। संत के साथ यदि हमारा संबंध 100 प्रतिशत होगा तो संत 100 प्रतिशत हमारा होगा। संत को कोई भेदभाव नहीं कि इसे मैं मेरा ज्यादा प्यारा रखूं या इसे कम रखूं या इसकी उपेक्षा करूँ.....सो, ऐसे मुक्तों के, संत के साथ के संबंध की बराबरी करके जलते रहने की बजाय हम अपना संबंध पक्का करके-संत को होलसेल अपना कर लें.......

और.....सभी **शास्त्रों ने संत को ही मोक्ष का द्वार कहा है और ऐसे मोक्ष के द्वार समान संत को** जीवन में स्वीकार करके आत्मबुद्धि और प्रीति करेंगे तब ही सच्चे भक्त बन पायेंगे– प्रभु का लड़का बन पायेंगे। इस संसार में हमें सचमुच सुखी करने वाले एकमात्र ऐसे भगवान धारक साधु ही हैं। क्योंकि वे अपेक्षा और उपेक्षा से परे हैं और अपेक्षा-उपेक्षा से पर कब हो सकते हैं ? जब उन्हें परम मांगल्यमूर्ति सहजानंद का सुख मिलता हो-तब ही अपेक्षा-उपेक्षा से पर और 'स्व' की अस्मिता से पर हुआ जा सकता है...... ऐसा सुख देने वाला साधु–जिसका अंतर भगवा है उसे मेरा-तेरा नहीं होता। उसमें टोटल वास प्रभु का है। उसे सारी सृष्टि प्रभुवासित ही दिखाई पड़ती है। ऐसे संत के बल से–ऐसे संत के आधार से हम जीयेंगे–उनके मुताबिक जीयेंगे, उन्हें प्रसन्न करने जीयेंगे तो हम में **प्रभु का आधार–प्रभु का आकार–प्रभु का बल और प्रभु की प्रसन्नता आ ही जायेगी।**

धन्य हो सहजानंदस्वामी को–जिन्होंने खूब करुणा करके ऐसे संतों की एक विरासत पृथ्वी पर अखंडित रखी। ऐसे संत के गुणगान नहीं गायेंगे–ऐसे संत की महिमा नहीं समझेंगे–अपनी उर्मियों को उन में स्वाहा नहीं करेंगे तो और कहां करेंगे ? अलबत्त ! ब्रह्मतत्त्व को पहचानने के लिये वेदों की वाणी भी पर्याप्त नहीं हुई तो ऐसे ब्रह्मस्वरूप संत को हम कैसे पहचान पायेंगे या उनकी महिमा भी क्या गा पायेंगे ?

तब भी महाराज ने आज ऐसे स्वामिजी की जयंती पर उनकी महिमा गाने और लिखने का मौका दिया है वही हमारा कोई बड़ा सौभाग्य है। जगत में सब कुछ मिलेगा पर सच्चे संत नहीं मिलेंगे। यह बात सुनने में सामान्य जैसी लगती है पर एक कोने में बैठ कर शांति से सोचें तो ख्याल आयेगा कि ये गुणातीत स्वरूप जो हमारे जीवन में आकर बसे वह कैसी अद्भुत घटना बन गई। जब ये गुणातीत स्वरूप हमें नहीं मिले थे उससे पहले हमारा जीवन कितना खाली-खाली था और अब कैसा हरा-भरा हो गया ! जैसे कि पूरी जीवनशैली ही बदल गई हो !

तो अब इन्हें स्वीकारें ! उनके साथ बाप-बेटे का, राधा-कृष्ण का, मीरां-कृष्ण का, अर्जुन-कृष्ण का, राम-हनुमान जैसा एक अटूट व अनन्य संबंध पक्का करें और जीवन को धन्य करें व प्रार्थना करे कि–

हे प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों ! आप मिले हो वही सच्चा ज्ञान और दूसरा सब कुछ अज्ञान ! आपको तत्त्व से पहचानने के लिए जो करना पड़े वही साधना कही जाए, बाकी तो सब कुछ देहाध्यास ! आपका वचन वही सभी शास्त्रों का सार, बाकी सब बेकार तर्क ! खुद में, सभी में आपको निहारते रह कर क्रिया करनी–वही हमारा एकमात्र स्वधर्म और साधना की पूर्णाहुति ! यह मान कर पूर्ण निष्ठा से वर्त पायें यही प.पू. स्वामिजी की जयंती निमित्त सभी गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना !

✡✡✡

'ताड़देव' की गतिविधियाँ.....

भगवत् कृपा के पिछले अंक में आपने पढ़ा होगा कि दिल्ली मंदिर के केम्पस का नाम प.पू. गुरुजी ने प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की मंजूरी लेकर 'अनिर्देश' से बदल कर 'ताड़देव' रखा और... 28 मार्च को ही **'ताड़देव'** नाम का बोर्ड बनवा कर प.पू. स्वामिजी के वरद् हस्तों पूजन करवा कर बाहर लगवा भी दिया। प.पू. गुरुजी की प.पू. काकाजी के प्रति की–गुणातीत स्वरूपों के प्रति की भक्ति देख कर दिल नतमस्तक हो जाता है......

भगवत् कृपा के पिछले अंक में समय के अभाव के कारण हम प.पू. गुरुजी की जयंती का विवरण व अपने अलग-अलग केन्द्रों से आए प.पू. गुरुजी के प्रति उद्गार इत्यादि नहीं दे पाए थे। लेकिन दूर-सुदूर बैठे सभी मुक्त इस उत्सव की हुबहु झंकी से लाभान्वित हो सकें, इस भावना से भगवत् कृपा के इस अंक में विस्तारपूर्वक विवरण दे रहे हैं।

26 मार्च रविवार की शाम को जगमगाता 'ताड़देव' सहज ही सब को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था....भक्तों के दिल का आनन्द तो मानो समाता ही नहीं था; क्योंकि आज उनके प्यारे प्राण पुरुष प.पू. गुरुजी की जयंती का उत्सव जो मनाया जा रहा था। संतों, युवकों, बहनों, गृहस्थों सभी की उमंग-उत्साह-खुशी देखते ही बनती थी कि ओहो हमारे जीवन

में प.पू. गुरुजी जैसे संत आ बसे...... हम निहाल हो गए—हम निहाल हो गए...... 1997 में जब हमने प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती पर 'गुरुभक्ति यज्ञ' में प.पू. स्वामिजी नादुरुस्त तबियत के कारण आ नहीं पाए थे..... उसके बाद प.पू. गुरुजी की जयंती पर अबकी वे पहली बार दिल्ली आ रहे थे; सो सभी के दिल में खूब आनंद था..... संतों युवकों ने प.पू. स्वामिजी के आने की खुशी में प.पू. गुरुजी को प्रसन्न करने की एकमात्र भावना से खूब ही भावना से सारे उत्सव का आयोजन किया था !

प.पू. गुरुजी को 63वीं जयंती निमित्त ज़हाज़ का आकार लिए एक बहुत ही सुन्दर मंच बनाया था। ज़हाज़ के कोने पर गुणातीत समाज का प्रतीकात्मक ध्वज बनाया था व आगे को गुणातीत ध्वज के रंगों के बीच ही 'ताड़देव' लिखा था। यह 'ताड़देव' नाम अपने आप में कई गहरे अर्थ लिये हुए था। प.पू. स्वामिजी कई बार कहते हैं—'ताड़देव यानि आत्मीयता से जुड़े सारे गुणातीत समाज की गंगोत्री ! गंगोत्री यानि गंगा के निकलने-फूटने का उद्‌गम स्थान.....' ज़हाज़ के आगे सभी केन्द्रों के मोनोग्राम्स भी रखे थे, जो इस बात के प्रतीक रूप थे कि इन सभी केन्द्रों की शुरुआत ताड़देव से हुई। यूं इन सब की नींव की ईंट तो ताड़देव है जो हम कभी भूला नहीं पायेंगे.....

दूसरी बात—ताड़देव का नाम वास्तव में प.पू. गुरुजी की प्रसन्नता हेतु भी रखा था.....हमने-सभी ने पहले से देखा है कि प.पू. गुरुजी के दिल में ताड़देव के प्रति एक अलग ही आकर्षण है। ऐसा नहीं कि प.पू. काकाजी स्थूलरूप से थे, तब तक ही रहा हो; बल्कि प.पू. काकाजी के शरीर छोड़ने के बाद भी ताड़देव के भाईयों के प्रति प.पू. गुरुजी विशेषरूप से ढले हमने हमेशा देखे हैं...... दिल्ली में उत्सव का कोई भी कार्ड छपा हो—चाहे वो मूर्ति प्रतिष्ठा के समय पर, चाहे प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती के समय पर..... प.पू. गुरुजी की हमेशा नज़र रहती कि ताड़देव के भाईयों का नाम आया या नहीं ? कई बार तो ऐसा लगता है कि ताड़देव के प्रति लगाव के कारण प.पू. गुरुजी को पक्षपात हो..... सो, यह नाम प.पू. गुरुजी को प्रसन्न करने ही लिखा था, क्योंकि हमें तो मियां के चांद से चांद है.....

हम सभी यह भी जानते हैं कि दिल्ली-पंजाब-उत्तर भारत में स्वामिनारायण धर्म को कोई जानता तक नहीं था, तब प.पू. काकाजी ने ही उत्तर के मुक्तों के लिए दिल्ली में प.पू. गुरुजी को भेज कर स्वामिनारायण का संदेशा फैलाने के कठिन कार्य की जिस प्रकार पहल करी, वह रेत में ज़हाज़ चलाने जैसा ही दुर्गम कार्य था और...... उन्होंने रेत में ज़हाज़ चला कर दिखाया भी ! सो, ज़हाज़ के चारों ओर रेत बिछाई थी।

ज़हाज़ बनाने के पीछे एक और संकेत यह भी था कि इस जीवन के भवसागर से पार होने संतरूपी ज़हाज़ में बैठ जायेंगे; तो वे हमें आराम से आनन्द कराते-कराते, बिना कोई साधन किए जन्म-मरण के चक्कर की पूर्णाहुति करा देंगे। हमारे भाग्य का तो पार नहीं कि हमें गुणातीत स्वरूपों के रूप में ऐसे समर्थ संत मिले हैं..... सो, हम बालक बन कर इनकी गोद अपना लें।

करीब साढ़े छः बजे तो दिल्ली 'ताड़देव' का केम्पस हरिभक्तों के समूह से भर उठा था....मंच पर जाने के लिए फूलों का सुन्दर गलीचा बनाया था.....प.भ. राकेशभाई शाह ने नेवी के कैप्टन की पोशाक पहनी थी..... 12 युवक नेवी की ही सफ़ेद पोशाक पहन कर प.पू. स्वामिजी, प.पू. गुरुजी के पधारने पर स्वागत के रूप में सेल्यूट दे कर मार्शल चाल से अगवानी करते हुए मंच तक ले गए। प.पू. स्वामिजी इन युवकों की भक्ति और आत्मीय मुक्तों का ऐसा समूह, आनंद-उत्साह देखकर अत्यन्त प्रसन्न हुए। प.भ. वच्छराजभाई ने प.पू. गुरुजी के जीवन के कई मार्मिक प्रसंग बता कर उत्सव निमित्त पधारे हुए स्वरूपों और मुंबई, हरियाणा, पंजाब, यू.पी. राजस्थान, गुजरात से आए महानुभावों का हृदय की भावना से स्वागत किया।

पू. महेन्द्र बापू ने अपनी जोशीली वाणी में प.पू. गुरुजी व प.पू. काकाजी के दिव्य संबंध का परिचय कराया। प.भ. प्रभाकरभाई ने प.पू. गुरुजी की स्वरूपों के प्रति की भक्ति व प.पू. गुरुजी की सर्वदेशियता के प्रसंग बताकर सभी को भाव-विभोर कर दिया.....

यदि हम भूलें न हों तो—26 जनवरी, 1986 को प.पू. काकाजी ने उनके ही साक्षात्कार दिन निमित्त गुणातीत ज्योत-विद्यानगर में समस्त गुणातीत समाज को अपना आखिरी संदेशा दिया था...... प. पू. काकाजी के अंतर्धान होने पर इन्होंने कभी उन बातों की जड़, रहस्य व तात्पर्य को पकड़ने के लिए प.पू. गुरुजी ने वह केसैट कम से कम अस्सी बार सुनी होगी और...... प.पू. गुरुजी की खूब इच्छा थी कि इस ऐतिहासिक प्रवचन—प.पू. काकाजी की अमृत आशिष से सभी लाभान्वित हो सकें। सो, खूब परिश्रम करके एक भक्ति अदा करने का आदर्श स्थापित करते हुए एक-एक शब्द को खूब गहराई से पकड़ कर एक पुस्तिका के रूप में छपवाई...... प्रवचन मूलतः गुजराती भाषा में था, सो पहले इसकी गुजराती पुस्तिका का विमोचन 16 मार्च को प.पू. पप्पाजी के वरद् हस्तों करवाया था......फिर उसी का हिन्दी भावानुवाद करके **'मोती बिखरे चौक में'** नामक पुस्तिका के रुप में प.पू. स्वामिजी के वरद् हस्तों से इसका विमोचन करवाया गया....वह भी एक

प्रार्थना के साथ कि चौदह साल के बाद अब तो हम भूतकाल को भूलकर सभी पूर्वाग्रहों को छोड़ कर, भविष्य को भविष्य में ही रहने देकर, वर्तमान काल में उसे अमल में लाकर साथीदार के रूप में सब एकजुट होकर, बिखरे हुए इन मोतियों को समेट कर अधिक सहकार की भावना से काम करके प.पू. काकाजी के प्रति भक्ति अदा करें।

राजकोट से विशेष रूप से प.पू. गुरुजी की जयंती निमित्त पधारे प.भ. कानजीभाई, जिनके संग- मानो एक छत के नीचे प.पू. गुरुजी सत्रह साल रहे; वे प.भ. हंसराज मदानजी, प.भ. एन.के. अग्रवालजी, प.भ. अजय मल्कानी, पंजाब से आये महेन्द्र जयसवाल, अमदावाद के प.भ. समीरभाई ने भी प.पू. गुरुजी की विशेषताओं–अनुभव व दिव्य शक्ति के प्रसंग बता कर अपनी भावनाएं व्यक्त करीं......

प.भ. राकेशभाई शाह ने बहुत ही भक्तिपूर्ण हृदय से प.पू. गुरुजी के लिए विशेष रुप से बनाया नया भजन- 'गुणातीत अस्मिता जगा रहे हो......' सुनाया जिसके राग का रहस्य यह था कि– 'कईयों ने देखा होगा कि 26 जनवरी '86 के प्रवचन के दौरान प.पू. काकाजी सभा में यूं खूब मार्मिक हंसते थे। सो, प.पू. गुरुजी जब **'मोती बिखरे चौक में'** पुस्तिका के लिए का आमुख सेट कर रहे थे; तब- जगजीतसिंह की गज़ल की एक पंक्ति जो कि उन्हें इस संदर्भ में खूब स्पर्श कर गई, वही उन्होंने प.पू. काकाजी के बारे में लिखते हुए नोट करी कि– **'तुम इतना जो मुस्करा रहे हो, क्या गम है जिसको छुपा रहे हो।'** वह लिखते हुए प.पू. गुरुजी के मुख पर जिन जिन्होंने वो भाव देखे उससे यूं लगा कि यह पंक्ति उनके भीतर को खूब छू गई है। सो, उसी बात को मद्देनज़र रखते हुए इसी राग पर यह भजन बनाया.....

फिर हार विधि व केक कटिंग का प्रोग्राम शुरु हुआ..... बहनों ने दिल्ली समाज की ओर से प.भ. स्वामिजी के लिए एक सुन्दर हार विशेष रुप से बना कर प्रार्थना व्यक्त करी थी कि– जैसे प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी व आप गुरुहरि योगीजी महाराज की माला के मनके में आए, वैसे ही हम ऐसा जीवन जीयें कि प.पू. गुरुजी की माला के मनके में आ जाएं !

प.पू. गुरुजी की 63वीं जयंती होने के कारण दिल के आकार के हार में '63' के अंकों के बीच स्वामिनारायण का तिलक चांदला बनाया था। जो अपने आप में गहरा अर्थ लिए हुए था :–'छः और तीन के अंक ऐसे हैं कि दोनों का मुँह आमने-सामने आता है। यानि–साथी मुक्तों के साथ मिलजुल कर रहें, उन्हें देख कर हमें आनंद हो....हम 36 के आंकड़े की तरह मुक्तों के साथ मुँह फेर कर ना रहें। बीच में तिलक- चांदला, यानि– अक्षरपुरुषोत्तम का संकेत इसलिए रखा कि प.पू. काकाजी 'स्वरूपलक्षी सुहृदभाव' की बातें करते थे कि हमारा सुहृद्भाव स्वरूपलक्षी होना चाहिये। मतलब–संत को केन्द्रबिन्दु रख कर मुक्तों के साथ जो सुहृद्भाव रखेगा, उसका संबंध ही संत के साथ दिन-प्रति दिन बढ़ता जाएगा।'

इसके बाद दो छोटे बच्चों–दिल्ली से प.भ. राकेश चौहान के बेटे जाग्रत व जगरांव से आए प.भ. सोहनसिंहजी के बेटे अमृत के लिए भी केक कटिंग करवा कर उनका जन्म दिन मनाया...... प.पू. गुरुजी के लिए भी केक हार वाली भावना लिये ही बनाई थी।

इसके पश्चात् एक और नया भजन 'गुरुजी का संबंध अनमोल दिया है मुक्तों, कोटि वन्दन हो, काकाजी को वंदन हो....' कव्वाली के रूप में पू. निमित्तस्वामी, प.भ. राकेशभाई, प.भ. विनोद (पंजाब), प.भ. संजय, प.भ. हृदय ने बहुत जोश व भक्तिपूर्ण हृदय से गाया। प.पू. स्वामिजी भजन के शब्द सुन कर बहुत ही प्रसन्न हुए.....

समय खूब हो चुका था..... दस बज रहे थे पर तब भी हज़ार के करीब मुक्त इतने आनंद में थे कि सभी के मन में ऐसा था कि घड़ी रुक जाए और हम यह दिव्य नज़ारा देखते ही रहें–देखते ही रहें...... सौ. शीला मल्कानी करीब चार-पांच बार बोलीं कि ज़हाज़ इतना सुन्दर बना है कि उस पर से नज़र हटाने का मन नहीं कर रहा। प.पू. स्वामिजी व प.पू. गुरुजी को हार पहनाने के समय युवकों ने आतिशबाजी छुड़ा कर अपना जो आनन्द व्यक्त किया और केक कटिंग के समय मंच के पीछे से रंग बिरंगे गुब्बारों के गुच्छे आकाश में उड़ते हुए खूब ही आकर्षक लग रहे थे, वह सब कुछ एक दिव्य अहसास भी करा रहा था.....

समय को देखते हुए प.पू. गुरुजी ने 10-15 मिनट ही, पर मार्मिक बातें करीं और प.पू. स्वामिजी को अधिक लाभ देने प्रार्थना करी.... प.पू. स्वामिजी ने भी भक्तों की भक्ति- भावना, उत्साह देखते हुए प.पू. गुरुजी की विशेषताएं बताते हुए प.पू. गुरुजी से एक दिव्य संबंध दृढ़ कर लेने की अद्भुत सूझ देते हुए करीब 40-45 मिनट अपनी परावाणी का धोध बहाया। अंत में प.भ. राकेशभाई ने इस उत्सव के लिए जिन- जिन्होंने जिस रूप में सेवा करी, साथ–सहयोग दिया उनका निम्न प्रकार आभार प्रकट किया–

★ आज यह जो हम ज़हाज़ देख रहे हैं– जो कि खूब भव्य व दिव्य भी लग रहा है। उसके लिए करीब एक महीने से पू. निमित्तस्वामी, प.भ. आशिष, प.भ. सागर, प.भ. हृदय, प.भ. पुनीत, प.भ. विपिनजी, प.भ. ओमप्रकाशजी वगैरह और उनके साथ युवकों व छोटे बच्चे भी लगे हुए थे। इन्होंने खूब मेहनत से और वह भी भक्तिभरे दिल से कि

प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी खूब प्रसन्न हो जाएंगे; यूं रात-रात को जग कर बनाई है। मेहनत इन बच्चों ने जरूर करी है, पर इसके पीछे का सारा कन्सेप्ट–डिज़ाईन व नाप आदि की शुरुआत से अंत तक की सेवा प.भ. अनिलजी ने अत्यधिक भक्तिभाव से खूब छुपे रह कर मानो पर्दे के पीछे रहकर करी है।

★ किचन डिपार्टमेंट की सारी सेवा पू. सुहृद्स्वामी, पू. संकल्प स्वामी, प.भ. विनोदभाई ठक्कर, प.भ. राजुभाई शाह, प.भ. विजयभाई महेता, प.भ. प्रकाशभाई, प.भ. दिलीपभाई शाह, इत्यादि ने खूब भक्तिभरे दिल से करी है।

★ केम्पस में लाईटिंग के लिए प.भ. सुरजीतजी ने हमेशा की तरह खूब अपनेपन से हमें योगदान दिया।

★ टेंट इत्यादि की सेवा के लिए व इस स्टेज के बनवाने में वासन वाले सरदारजी भी बहुत कोओपरेटीव रहे।

★ और......इस ज़हाज़ को आकार देने व रंगों से सुसज्जित करने में प.भ. सुनील मारवाह (थर्माकोल वाले), प.भ. रामबहादुर, प.भ. रामजीत, प.भ. पंकज (पेंटर) ने जो अपनेपन से सेवा करी है वह खूब सराहनीय है।

★ ट्रांस्पोर्टेशन व सभी हरिभक्तों के ठहरने इत्यादि की सेवा में प.भ. प्रभाकरभाई व प.भ. कौशिकभाई ने बख़ूबी व्यवस्था करी।

प.पू. काकाजी कई बार कहते कि–'जमात-करामात'! तो, आज यह सब उसी जमात करामात के फलस्वरूप ही संभव हुआ है और प.पू. गुरुजी को प्रसन्न करने की एकमात्र भावना के कारण ही आज सभी खूब आध्यात्मिक– दिव्य वातावरण महसूस कर रहे हैं। सो, सभी की ओर से इन सबको हार्दिक धन्यवाद है।

दूसरी बात-सभी सेवाओं में अन्य कई हरिभक्तों ने भी सेवाएँ करी हैं, जिनके नाम शायद बोले नहीं गए होंगे; लेकिन सच उन सभी की छुपी सेवा, भावना, सहयोग-सहकार को खूब-खूब धन्यवाद !

इसके पश्चात् सबने प्रसाद लिया और भीतर में प्रार्थना करते हुए सभी अपने दिलों में स्मृतियों की अमूल्य पूंजी लेकर सब विदा हुए.......

प.पू. स्वामिजी व प.पू. गुरुजी द्वारा दिए आशीर्वचनों अन्य केन्द्रों से आए उद्गार–विस्तारपूर्वक नीचे प्रस्तुत कर रहे हैं......

26 मार्च 2000 के शुभ दिन की आशिष वर्षा

❖ बेशक हमने सभा छः बजे के बजाय पौने सात बजे चालू करी। फिर भी अभी दस बज चुके हैं। खास करके स्वामिजी का लाभ लेना है। स्वामिजी बार-बार आते नहीं हैं। फिर भी सबसे पहले तो आप सबका आभार मानना है जो आपने मुझे ताड़देव की बोट में बिठा दिया। वो इसलिए कि मैं हमेशा कहता आया हूं कि योगीजी महाराज ने मुझे ताड़देव का जो जोग करवा दिया; वो ही मेरे जीवन की सबसे बड़ी घटना बनी। उसी कारण प.पू. काकाजी और प.पू. पप्पाजी का संबंध हुआ व स्वामिजी की सेरेछाया में भी रहने को मिला....यहां कई बार फंक्शन्स होते हैं। मंदिर में रहते हुए सेवक या नज़दीक से जुड़े हुए भक्तों ने भी देखा होगा कि फंक्शन्स के डेकोरेशन्स वगैरह के दौरान मैं सिर्फ एकाध चक्कर–वो भी मुश्किल से मार गया होऊंगा। लेकिन जब मैंने ये बोट पर नाम लिखने की शुरुआत होती देखी–'ताड़देव', तो कल से तो मैं कम से कम 15 बार इसका चक्कर मार कर गया हूं। मैं इतना खुश हो गया कि कमाल करी इन्होंने। बाकी सब जानते हैं कि यह मेरे नैचर में ही नहीं। सेवक लोग इतना काम कर रहे हैं, तो चलो देखूं। मैंने आशिष को भी बात करी थी कि इतने फंक्शन्स हुए लेकिन तूने कभी नहीं देखा होगा कि मैं बार-बार यूं देखने आया होऊंगा। हां, एक दूसरी भावना यह भी थी कि अभी एक सेवकभाव से हम काम कर रहे हैं। मैंने आशिष को भी कहा था कि ऐसा सेवकभाव बनाए रखना। सपोर्टर्स–साथ देने वाले बढ़ते जाएंगे, लेकिन फिर हम उनको काम सौंप कर एक चेयर पर बैठे रहेंगे तो वो लम्बा निभेगा नहीं। जैसे हमारे हरिधाम में प्रेमस्वामी हैं। शुरूआत से देखता हूं कि हर काम में वो खुद लगे रहते हैं और तब जाकर दूसरों को वे टॅच कर पाते हैं। चलो ये बात तो कोई और चल पड़ी। पर, जैसे कि अभी स्वामिजी ने पुस्तक का उद्घाटन किया। ये पुस्तक निकालने की मेरी काफी समय से इच्छा थी। 26 जनवरी को प.पू. काकाजी ने ये प्रवचन किया था। तब तो हम खाली सुन कर आ गए थे। लेकिन मार्च महीने में प.पू. काकाजी ने जब शरीर छोड़ा तब एकदम मुझे हुआ कि वो 26 जनवरी को इन्होंने क्या बात करी उसे ठीक से सुनूं। तो मार्च, अप्रैल, मई, वैसे तो करीब डेढ़ साल तक हमारा रोने-धोने में ही गया। लेकिन फिर मैंने ये टेप कम से कम अस्सी बार सुनी होगी। मुझे एक-एक लब्ज़ उसका याद है। लेकिन ये किताब के लिए जब फिर सुनना हुआ। उसकी राईटिंग हुई, उसका प्रूफ चेकिंग हुआ– तब यानि अभी-अभी उसकी गहराई मुझे खुद को भी समझ आई। क्योंकि साधु की भाषा समझ आए ऐसी होती नहीं है। ये बात विश्वास से मानना। अभी भी स्वामिजी बात करेंगे। अब तो टेक्नोलॉजी इतनी अच्छी हो गई है कि भले अपना ध्यान अभी नहीं होगा, लेकिन वो टेपरेकार्डरस वगैरह इतनी अच्छी तरह टेप होता है कि बाद में हम आराम से सुन भी

पाएंगे। पर, फिर भी खूब ध्यान से सुनना कि वो क्या कहना चाहते हैं ? जैसे कई बार मैं कहता हूं कि भई साधु कुछ कहता है तो उसका घर-मतलब किस मूल से—जड़ से वो बात कर रहा है ? उसका रहस्य-तात्पर्य वो समझने के लिए वो सारी बातें संत मुझे ही कह रहे हैं यूं लेंगे तब पकड़ी जाएगी। जैसे यहां एक सूत्र लिखा है, मैंने प.पू. स्वामीजी को पढ़वाया कि **'ज्ञान यानि जानना नहीं, ज्ञान यानि-मूर्तिमान गुणातीत संत।'** अब ये बात समझ में आए ऐसी है ही नहीं। प.पू. स्वामिजी भी बोले कि बहुत बड़ा सूत्र दे दिया है। मैंने कहा जब एन्टर होते हैं वहां तो लिखा है—**आओ, जय स्वामिनारायण ! शुभं भवतुङ्क मंगलं भवतु।** लेकिन दो घंटे आपके पास बैठ कर जाएंगे, तो इतना तो पता लगना चाहिए कि सब कुछ ज्ञान भूल करके या आप कहें वो करना है। मैं कई बार कहता हूं कि हम कैसे भी होंगे, जीवन में ये एक चीज़ पकड़ रखी होगी कि ऐसे संत मिलने के बाद हमारा कोई स्वभाव, कोई प्रकृति इनके पास रखना नहीं है। जैसे प.पू. काकाजी हमेशा कहते थे कि **एक जगह तो ऐसी रखो कि जहां हमारी कोई चीज़ ना रहे।** स्वामिजी को याद होगा तो एक बार मैंने उन्हें कहा था कि स्वामी, एक बात याद रखना कि मेरे मन में कुछ भी होगा, मैं कुछ भी करना चाहता होऊंगा, लेकिन मैं करूंगा वो ही जो आप कहोगे। ये मैंने खाली कहने के लिए नहीं रखा हुआ है। ज्ञान यानि-मूर्तिमान गुणातीत संत; वो इसको बोला जाता है। जैसा अर्जुन ने रखा था। अर्जुन कैसा ही था लेकिन नारायणस्वरूप वो बना। भीष्म कहो, द्रोणाचार्य कहो ये सब कितने ऊँचे आदर्श वाले—अर्जुन से कितने हाई मॉरल के थे। लेकिन इनकी मूर्ति कृष्ण के साथ कहीं दिखाई नहीं पड़ती। मैंने ये बात कितनी बार कही है। कई बार नहीं, तकरीबन मेरे हर प्रवचनों में बात तो हमेशा आती है। केरेक्टरवाईज़ देखो तो युधिष्ठिर का केरेक्टर अर्जुन से कितना ऊँचा था। लेकिन उसको 'सत्य' बीच में आ गया कि मैं झूठ नहीं बोलूंगा। भीष्म को आ गया कि मैं हस्तिनापुर के सिंहासन के साथ बंधा हुआ हूँ। द्रोणाचार्य को अपना ज्ञान बीच में आ गया। जबकि अर्जुन को—सब कुछ होते हुए भी एक बात पक्की थी कि—सबसे पहले कृष्ण ! तो स्वामिजी हमें आज आशीर्वाद दें जाएं कि बाकी सब कुछ हम भूल जाएं। कुछ भी जानने की हमें कोई जरूरत नहीं है। काकाजी ने यही बात करी ज्ञान यानि—जानना नहीं। चार वेद से जानना वो ज्ञान नहीं; ब्रह्मज्ञ—गुणातीत संत पांचवा वेद है। उसकी पहचान, वो जो कहे वहां अपने ज्ञान का अंत आ जाता है। ये बातें हम विचार करें तो ! अहो ! ये किताब (मोती बिखरे चौक में) आप जरूर ले जाना आज। डिस्काऊंट पर मिल रही है ना ? इसलिए कह रहा हूँ। उसमें काकाजी ने कितने-कितने रहस्य बताए हैं। काकाजी ने एक जगह पर प्रगट और प्रत्यक्ष का फर्क भी बताया है। कहा—प्रगट तो मिले ही हैं। देखो अपने ज्ञान की शुरुआत भी वहीं से हुई है। दूसरों को तो भगवान ढूंढने हैं। हमारे भगवान तो धरती पर मौजूद हैं—प्रगट हैं। लेकिन काकाजी ने एक फर्क बता दिया कि प्रगट तो मिले ही हैं, पर प्रत्यक्ष करने हैं। हम प्रगट और प्रत्यक्ष को भी कुछ एक सा कहा करते हैं या कुछ ऐसा इन्टरप्रीटेशन कर देते हैं कि स्वामिजी सोखड़ा हों तब वो प्रगट हैं और आज दिल्ली में आकर बैठे हैं तब वो प्रत्यक्ष हैं। ऐसी बात नहीं है यह। वो हमेशा प्रगट हैं, हमें प्रत्यक्ष करने की करामात आनी चाहिए। ये घनश्यामभाई, भरतभाई, बापू सब बैठे हैं। काकाजी इस बात को ताड़देव में जेस्चर करके बताते थे। एकदम आवाज़ लगाते थे—रमेश ! हरखचन्द-हरखचन्द ! हरखचन्द रसोई में काम हो तो हॉल में आ जाए। तब वे कहते कि देखो, प्रगट था तो प्रत्यक्ष हो गया ना ! काकाजी ये जेस्चर करते थे। मतलब कि प्रगट होने चाहिए। उसे प्रत्यक्ष करने की करामात भी ये किताब में बताई हुई है कि उसमें लय और लीन हो जाओ। लय और लीन हो जाओ। तो प्रगट जो है वे प्रत्यक्ष हो जाएंगे। ऐसी कई गहराई की बातें इस किताब में हैं। मुझे आज ज्यादा बातें करनी भी थी। मैंने विचार करा था कि थोड़ी बातें किताब के बारे में करता रहूँगा-करता रहूँगा लेकिन 10 बज कर 10 मिनिट हुई है। आप लोगों ने देखा होगा ना, घड़ी भी वहां थम जाती है। सो मैं भी थम जाता हूँ। मैं तो आपके लिए यहां बैठा हुआ ही हूँ। अब स्वामिजी कम से कम साढ़े दस तक बातें करें इतनी प्रार्थना !

—प.पू. गुरुजी

❖ **गुरुजी मुझे बहुत ही जँचता है** उसका एक ही कारण है..... आप लोग संसार में जी रहे हो, संसार मीन्स द्वंद, मीन्स हर्ष-शोक, मान-अपमान, सुख-दुःख में सारी दुनिया की हर एक व्यक्ति फंसी हुई है। परिवार छिन्न-भिन्न हो रहे हैं, दर्द की बात मैं क्या बतलाऊँ ? यूरोप की धरती पर दो करोड़ लड़कियों ने अपना शरीर बेच कर भी कपड़े खरीदे और मीलेनीयम मनाया। यह करुण हालत, यह करुण कलियुग भयंकर गंदगी का आप सब को मालूम है। सुहृदभाव जैसा, आत्मीयता जैसा शब्द मानव समाज में आज दिखाई नहीं पड़ता है। इसलिए गुरुजी का एक गुण लेकर आपको चलना है। गुरुजी के बारे सब लोगों ने बहुत बातें करी हैं। बहुत आनंद भी हुआ है। अजय मल्कानी ने अद्भुत बात बतलाई कि मेरा गुरु तो है, मगर गुरु को जँचे ऐसा मेरा वर्तन है क्या ? ये भी एक प्रश्न है। गुरु से नॅच्युरल प्रीति हो जाए। गुरु के आशीर्वाद से हमारे इन्द्रियाँ—अंतःकरण बदल जाते हैं।

इसलिए एक बात करता हूँ **गुरुजी एक भजनीक संत है। ताड़देव भजन का मुख्य केन्द्र था, आज भी है।** बस यही मैं हर रोज याद करता हूँ। बापू भी रात्रि को–सुबह में भी इतना भजन करे, इतना भजन करे, गुरुजी भी। दो मुक्तों के बीच आपस–आपस में कोई प्रॉब्लम हो जाए,

प्रश्न हो जाए,

गलतफहमी हो जाए;

शंका-आशंका हो जाए,

नफ़रत हो जाए,

आत्मीयता की दीवार जब टूट जाए,

एक ही मार्ग है भजन-स्वाध्याय ! हर एक प्रसंग पर भगवान को कर्ताहर्ता मान कर स्मृति के साथ यदि हम भजन का बल लें तो सब प्रकार का समाधान मिल जाता है। गुणातीतानंदस्वामिजी ने लिखा है, गुरुजी ने वह बात आपको बतलाई होगी। 'महामंत्र' द्विशताब्दी महोत्सव का वर्ष चालू हो गया है। द्वितीय सोपान हम 'फनेनी' की धरती पर मनाने वाले हैं और तृतीय सोपान हम सब–समग्र गुणातीत समाज साथ मिल कर हरिधाम में मनाएंगे। एक प्रसंग आपको याद कराता हूँ। भगवान स्वामिनारायण ने कहा है कि मेरा मंत्र मेरी मूर्ति से महान है। कई योगियों का जीवन मैंने देखा– जब छोटा था–तीन बार हरिद्वार, ऋषिकेष पहुँचा। जिनके साथ मुझे लगाव था वे मेरे गुरुजी बहुत समर्थ थे। पंच महाभूत पर उनका काबू था। मगर प्रकृति पर काबू नहीं था। फिर योगीजी महाराज मिले। बापा ने काकाजी को अद्‌भुत दर्शन करवाया और काकाजी ने समग्र गुणातीत समाज में बापा का अद्‌भुत दर्शन करवाया। **काकाजी नहीं होते तो बापा की पहचान किसी को होने वाली नहीं थी। बापा भी भजन का स्वरूप; काका भी भजन का स्वरूप ! गुरुजी भी एक भजन का स्वरूप !** इसलिए मैं आपको कहता हूँ–संसार मीन्स होली और दीपोत्सवी का मिश्रण ! कुछ नहीं है संसार में। सुख जैसा कोई शब्द ही नहीं है। सच्चा सुख भजन में है। पंजाब की धरती पर राणा रणजीतसिंह था। उनकी एक रखैल एक कोठी में रहती थी। लाहौर की धरती की मैं बात कर रहा हूँ। भगवान स्वामिनारायण के परमहंस–सुखानंदस्वामी चार संतों के साथ वहां से गुज़र रहे थे। बारिश खूब हो रही थी। सब कांप रहे थे। वो रानी देखती थी कि बेचारे संत लोग जा रहे हैं; कांप रहे हैं। उसने अपने दो-तीन आदमियों को भेजा व उन्हें घर पर बुलाया। लेकिन वो संतों ने कहा कि हम स्वामिनारायण के संत हैं। बहन को बोल देना कि नीचे ना आए। वो हृदय वाली थी, धार्मिक–रीलीजियस माईन्डेड थी। स्त्री हमेशा रीलीजियस माईन्डेड होती ही हैं। पर यदि बुरा संग मिल जाए तो वो बुरी हो जाती है। तीन दिन वो संत वहां रहे। सुबह एक घंटा भजन करे, एक घंटा गोष्ठी-सत्संग। फिर गांव में जाते थे, सत्संग की बातें करते थे; रात्रि को वापिस। रात्रि को एक घंटे तक भजन, फिर थोड़ा सत्संग। वेश्या जैसी वो स्त्री धून में लीन हो जाती थी–स्वामिनारायण-स्वामिनारायण। वो भजन और सत्संग के शब्दों से उसकी मलिन वासना धीरे-धीरे साफ होती गई। यह फेक्ट बात मैंने आपके सामने रखी है। फिर वह स्त्री ने कहलवाया कि–एक दिन और ठहरो, फिर कहा– एक दिन और ठहरो। तीन दिनों में उसके अंतर की आँख खुल गई.... उसके अंतर में से आवाज़ आई, मुझे भी भगवान भजने चाहिए। अन्तर में आवाज़ आए कि देह प्रभु का है, प्रभु के लिए उसका उपयोग होना चाहिए। फिर एक दिन और संतों को ठहरने के लिए कहा और वो ऊपर बैठ कर सुनती रही, सुनती रही। दूर से दर्शन करती रही, कथावार्ता भी सुनती रही। उसका मन भजन में लय हो गया। **सभी रोग की दवा एक भजन है।** हसबेन्ड और वाईफ के जीवन में प्रसंग होने वाला ही है। लड़की और माँ के बीच प्रसंग होने वाला ही है। पुत्र और पिता के बीच प्रसंग होने वाला ही है। संसार मीन्स डिर्स्टबेन्स ! .....वहां आत्मा की रक्षा करने के लिए सत्संग और भक्ति अनिवार्य ही है। प्रसंग बनेंगे ही, कोई बीमार हो मन से बीमार हो, कोई स्वभाव से बीमार हो; कोई सांसारिक प्रसंग से बीमार हो। सबको कहता हूँ कि कर्ताहर्ता सिर्फ प्रभु हैं। किसी का अभाव मत लेना। किसी के दोष की ओर–स्वभाव की ओर आपके मन की वृत्ति ना जाने दो। सिर्फ भजन, सिर्फ प्रार्थना !

मैंने जब सुना कि ये ज़हाज़ का नाम रखा है 'ताड़देव' तो मुझे बहुत आनंद हुआ। वो जो पुस्तक मेरे पास आ गई और साधु ने मुझे टीका लगा कर प्रसादी का करने कहा, तो मैंने भी 'ताड़देव' लिख दिया। फिर आशीर्वचन के लिए आया तो मैंने फिर लिख दिया। **ताड़देव मीन्स–जहाँ केवल संबंधयोग था।** सब के लिए हृदय में एक ही स्थान, सेवा–सरभरा में, आत्मीयता में, प्रेम में सबके लिए एक ही स्थान। काकाजी, पप्पाजी बोलते थे, ये चौरासी स्टेप्स चढ़कर कोई भी व्यक्ति यहां आता है; वो बहुत भाग्यशाली है। **ये मंदिर है, यहां जीवंत मंदिर है। ताड़देव मीन्स-अक्षरधाम** ! बहुत भाग्यशाली आत्मा वहां पहुँच सकती थी। **साधु एक जीवंत मंदिर है।** काकाजी सबको कहते हैं, मंदिर में जब कोई व्यक्ति आए उसका सम्मान प्रभु के भाव से करना चाहिए। **सिर्फ संबंधयोग** ! मुझे बहुत जँचा। **ताड़देवङ्कसंबंध, भजन सेवा का वो समन्वय ! जहां संबंध है वहां सुहृदभाव होगा, वहां आत्मीयता होगी।** वहां सेवा होगी– नेचरल-नेचरल-नेचरल, मध्य 28, 41 वहां प्रभु का संबंध

निरन्तर बढ़ता रहेगा..... चार प्रकार का कर्म है। देह का कर्म है, धन का कर्म है, मन का कर्म है, आत्मा पर लगा हुआ जन्म और मरण का रोग है। वो चारों प्रकार के रोग को निकालने के लिए ही उपाय है–बस भजन !

भजन मीन्स–हर प्रसंग में प्रभु को कर्ता हर्ता मानें,
ज्ञान मीन्स–सत्पुरुष !
ज्ञान मीन्स–प्रत्यक्ष भगवान का स्वरूप !
ज्ञान मीन्स–वो सब देखते हैं और मेरे हृदय में बैठे हैं। मेरे जीवन में जो भी बनता है, वो मुझे आगे ले जाने के लिए; मीन्स–प्योरीफिकेशन के लिए, इवोल्यूशन के लिए और अच्छा संबंध, अच्छा नाता–पिता और पुत्र का बनाने के लिए। फिर लय अवस्था के लिए भजन इज़ मस्ट !

..... सात्त्विकता योगा से कभी भी नहीं जाती है। गुण का अवॅरनेस–मैं गुणवान हूँ, मैं सच्चा हूँ। मैं प्रेमी हूँ, मैं भक्त हूँ। वो कभी नहीं जाती है। इसलिए भक्ति अनिवार्य है। इसलिए भजन अनिवार्य है। मेरे में ऐसा अच्छा गुण है, मैं बुद्धिशाली हूँ, मैं अच्छा प्रवचन कर सकता हूँ–ऐसा जो भाव है–सात्त्विकता, शिष्यों का, खिंचाव से कई बार नापास हो जाते हैं। इसलिए संत से **संबंध दृढ़ करने के लिए भजन अनिवार्य ही है।** तो **गुरुजी मुझे इसलिए जँचते हैं। ताड़देव की धरती मुझे** इसलिए **जँचती है।** आज भी जँचती है। वशी जब महापूजा में लय होकर प्रार्थना करता है। बापू शिकागो की धरती पर बेसमेन्ट में बैठकर भजन करता था, मैं पहुँच गया। वह इतना डूब गया था–डूब गया था कि मैं एक घंटे तक ऊपर बैठा रहा और सोचा कि बापू को मिल कर मैं जाऊंगा। **भजन मीन्स–हर एक प्रसंग में कर्ता हर्ता प्रभु को–संत को मानना।** भजन का दूसरा भाव है–मैं स्वामी, तू नारायण ! स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण, स्वामिनारायण ! एक वृत्ति यहां रखनी है, दूसरी वृत्ति प्रभु में रखनी है–प्रत्यक्ष स्वरूप में रखनी है। मैं स्वामी–तू नारायण ! ऐसे भाव से यदि भजन करते रहेंगे–आधि, व्याधि, उपाधि; रजोगुण, तमोगुण, सत्त्वगुण, काल कर्म और माया का जो प्रचंड प्रभाव मानव शरीर पर है...... उसमें से मुक्त हो जाएंगे।

माया मीन्स खटपट,
माया मीन्स द्वेष बुद्धि,
माया मीन्स अरुचि,
माया मीन्स भक्तों की मनसा–वाचा उपेक्षा ! वो तीन प्रकार के जो भाव हैं, काल कर्म और माया का प्रभाव–वह हट जाएगा। विषय का रस कम हो जाएगा; ब्रह्मरूप हो जाएगा। इसलिए मैं वो प्रसंग फिर दोहराता हूँ। चार दिन वो संतों का भजन-प्रार्थना सुन कर उसकी विषय वासना खत्म हो गई। वो सुनती ही रही, सुनती ही रही; लय हो गई। उसका हस्बेण्ड रणजीतसिंह उसको याद नहीं आया, लय हो गई। कथावार्ता में डूब गई। शुद्धिकरण चार दिनों में हो गया। पांचवें दिन संतों के साथ वो भी चल निकली। एकांत में वो जंगल में पहुँच गई...... स्वामिनारायण मंत्र के साथ अन्न जल का त्याग करके एकांत में भजन करती रही, करती रही। वो प्रभु का दर्शन करने के लिए वो भी तत्पर हो गई। भजन-समागम से वासना खत्म हो गई, तो सामान्य सांसारिक प्रॉब्लम तो इज़ीली विध इन ऐ नो टाईम–श्रद्धा रखोगे तो खत्म हो जाएगा। वो तो नेचरल चला जाएगा... पाँच दिन हो गए थे, छठे दिन वो (रणजीत सिंह) वहाँ पहुँचा। एकांत में वो पेड़ के नीचे बैठ कर भजन में डूब गई थी। सातवें दिन उसके फेस में से प्रकाश की ज्योति निकली। वो भी लय हो गया..... आँख में से जब प्रकाश की ज्योति निकली, हृदय में ठण्डक ! आंख खोली–रणजीत सिंह का दर्शन हुआ वो उसको बोली कि मैं प्रभु के पास पहुँच गई। प्रभु मुझे नया जन्म देने वाले हैं और मैं प्रभु का और अधिक सुख प्राप्त करूँगी। रणजीत सिंह ने कहा कि मेरा भी कल्याण करना। तो स्वामिनारायण की हिस्ट्री कहती है..... रणजीत सिंह ने गुण लिया अपनी औरत का, तो वो रणजीत सिंह को भी भगवान स्वामिनारायण दर्शन देकर साथ में ले गए। मैं यह बात इसलिए कहता हूँ कि आप संसार में हैं। तो कभी किसी के द्वेष में नहीं जाना। बस ! जो हो रहा है, आप किसी भी व्यक्ति का दोष देख रहे हो, आप अपना ही प्रतिबिम्ब समझना बस ! किसी की ओर अरुचि आ जाए, अपना ही प्रतिबिम्ब समझना। जब प्रभु की प्रभुता प्रगट होगी–भजन का सच्चा आनंद यहां प्रगट होगा, सभी व्यक्ति में आनंद भी दिखाई पड़ेगा। जब संबंध बढ़ता ही रहेगा–बढ़ता ही रहेगा, तो प्रभुमय दिखाई पड़ेगा। जब प्रभु प्रगट हो गया, तो सिर्फ प्रभु ही होगा।

तो, **गुरुजी मुझे बहुत जँचते हैं।** काकाजी की करुणा के फलस्वरूप लाखों जीवों के कल्याण के लिए राजधानी जैसे दिल्ली शहर में एक अद्‌भुत जीवंत–एक गुणातीत भावना यहाँ प्रगट करने के लिए; शास्त्रीजी महाराज का संकल्प, अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की उपासना के लिए काकाजी ने संकल्प किया; गुरुजी को निमित्त बनाया–सब को मालूम है। तो, गुरुजी के प्रागट्य दिन पर मैं आपको एक ही विनती करता हूँ–सिर्फ सद्‌भाव रखोगे तो भी कल्याण हो जाएगा। वो औरत का पति तो उसे ढूंढने के लिए निकला था–मेरी औरत, मेरी रखैल कहाँ गई ? कहाँ गुम हो गई ? मुझे छोड़कर कहाँ चली गई ? लेकिन रणजीत सिंह के हृदय का परिवर्तन–वह मंत्र का फल है। भजन का फल है। आपको भी

मालूम है कि हनुमानजी के जीवन में एक संकल्प उठा–जब वो पर्वत लेकर जा रहे थे..... कि ओहो ! मैं नहीं होता लक्ष्मणजी का क्या होता ? राम ने भरत में प्रवेश किया ! सब के हृदय को निरतंर वो देखते रहते हैं। प्रभु का एक ही उद्यम है–सेवक के हृदय में कितनी वासना है ? कितनी कम हुई ? कब उसका आप्रेशन करना है ? प्रभु एक ही विचार में डूबे रहते हैं। वासना और स्वभाव के द्वंद्वों से मुक्त होकर सेवक मेरे में वो लय हो जाए। ऐसी एक भावना से एक अद्भुत सुख-आनंद प्रदान करने के संकल्प से भगवान स्वामिनारायण पृथ्वी पर आए, अखंड रहे। हाँ–तो मैं आपको यह कहता हूँ कि हनुमानजी को संकल्प उठा, प्रवेश किया रामजी ने भरतजी में। भरतजी ने–यह राम का शत्रु होगा सोचकर बाण लगाया और हनुमानजी नीचे गिरे। राम नाम का भजन चालू ही था। भरतजी दौड़े, सब बात सुनी; कहा–चिंता मत करना। राम से राम का मंत्र महान ! प्रभु की स्मृति करके, प्रभु का भजन करके, बाण पर बैठा कर हनुमानजी को भेज दिया। भगवान स्वामिनारायण ने कहा कि मेरी मूर्ति से मेरा मंत्र महान !

तो आज तो अनेरी सुन्दर तक है। गुरुजी जैसा भगवत–स्वरूप एक पवित्र संत। उसकी स्मृति से भगवान स्वामिनारायण का भजन करते रहना, करते रहना। संतों के साथ, संतों के वचन से जीवन जीकर भजन करते रहना, करते रहना। तो, जीवन संपूर्ण सफल बन जाएगा।

ये गुरुजी मुझे इसलिए जँचते हैं–

अपना बल छोड़कर,
बुद्धि का बल छोड़कर,
विचार का बल छोड़ कर,
शिष्यों का बल छोड़ कर,
सारे समाज का बल छोड़ कर,
समाज की कोई किंचित–किंचित, समाज ने कुछ भी बोला–मगर वो सब छोड़ कर–एक ही बल–सबके पास भजन कराया, बस ! भजन–एक प्रभु का बल है; अनन्य आसरा–एक प्रभु का बल है। भजन मीन्स आसरा–अनकन्डीशनल सरन्डर एट धी फीट ऑफ धी मास्टर। अनन्य शरणागति, अनन्य आसरा, इससे हम भजन कर सकते हैं। तो आज इतनी प्रार्थना करता हूँ भगवान स्वामिनारायण, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज के चरणों में, काकाजी, पप्पाजी के चरणों में मैं प्रार्थना करता हूँ। आप लोग यहां आए हो, मुझे बहुत खुशी है। गुरुजी के साथ मैत्री बढ़े वैसा प्रयत्न करना। आत्मीयता से प्रीति बढ़े, सुहृदभाव बढ़े इसलिए प्रयत्न करना। **ये साधु को कोई स्वार्थ नहीं है।**

आपने सब का प्रवचन सुना यदि साधु को स्वार्थ होता है वो साधु नहीं कहा जाता है।
साधु का एक ही जीवन है–भजन !
साधु का दूसरा जीवन है–भगवान के भक्त !
गुरुजी भक्तों के लिए भी भजन करते हैं,
गुरुजी भक्तों के लिए भाग दौड़ करते हैं। उसे कोई स्वार्थ तो है नहीं। तो उसके जीवन की ओर दृष्टि रख कर हम भी उसके मार्ग पर चलें।

द्विशताब्दी महोत्सव आ रहा है। सिर्फ डेढ़ साल बाकी है। 2001 में हम सब इकट्ठे होकर मनाएंगे। समग्र गुणातीत समाज इकट्ठा होकर मनाने वाला है। तो, आप भी–चाहे किसी को मानो, कोई राम को मानो–कोई चिंता नहीं है; कृष्ण को मानो तो भी चिंता नहीं है। मैं कृष्ण को मानने वाला था। मैंने बहुत गीता पढ़ी है और गीता मुँहजबानी जैसी थी। मैं जब 11वीं कक्षा में पढ़ाई करता था, सारी गीता मुँह पर थी। लेकिन यही सोच विचार में था कि मैं अर्जुन; कृष्ण होना चाहिए। फिर योगीजी महाराज मिल गए। योगीजी महाराज की सच्ची पहचान काकाजी ने करवाई। सारी दुनिया–दो लाख सत्संगी ऐसा ही मानते थे कि भला-भोला साधु है। लेकिन काकाजी ने कहा कि अक्षरधाम में अनंत मुक्तों के साथ बैठी हुई उस दिव्य सिंहासन पर जो मूर्ति है और योगीजी महाराज इन दोनों में कोई फर्क नहीं है। तब तो मालूम पड़ा कि ये साधु नहीं हैं; उसको सफेद दाढ़ी नहीं है। भगवे चोले नहीं हैं, उसका भोला हृदय नहीं है। तब तो सबको मालूम पड़ा।

वो सनातन दिव्य पुरुष–काकाजी ने एक अद्भुत संत जो इस धरती पर रखा। कम से कम उसका समागम ना कर सको, तो सद्भाव रखना। अशोक विहार वाले जो यहां आए, मुझे बहुत खुशी हो गई। इतना आनंद हुआ, इतना आनंद हुआ कि इन्हें संतों के प्रति सद्भाव है।

अन्येक्षेत्रे कृतं पापं, तीर्थ क्षेत्रे विनश्यतिः।
तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति॥

हरिभक्त तीर्थ समान है।
भजनीक सेवक तीर्थ समान है।
पवित्र संत मूर्तिमान तीर्थ है और तीर्थस्वरूप बनाते हैं।

जगत में जो पाप हुआ वो तीर्थ में जाओगे, खत्म हो जाएगा। आज तो गंगा बेचारी रोती है. पटना में गंगा बह रही है। वो बेचारी रोती है कि मैं कैसे पवित्र...... ! वो बिहार की धरती पर महावीर, बुद्ध–वो बिहार की यूनीर्वसिटी ऐसी थी–जिसमें सोक्रेटिस, शेक्सपियर, टोल्सटोय, जर्मनी के सभी साईन्टिस्ट और फिलोस्फर्स बिहार की धरती पर आकर सनातन वैदिक संस्कृति की किताबें लेकर चले गए.......

एक प्रश्न है। भारत का क्या होगा ? तो मैं आपको यही कहता हूँ। अर्जुन का सारथी कृष्ण बस ! हम सभी अर्जुन हैं। कृष्ण होना ही चाहिए। **पवित्र पुरुष कृष्ण का स्वरूप है। पवित्र संत प्रभु का स्वरूप है।** आप लोगों के लिए अच्छा चान्स है। **गुरुजी एक भजनीक संत हैं, इसलिए मुझे बहुत जँचते हैं।** भजन का बल लेना कोई सामान्य चीज़ नहीं है।
हर एक व्यक्ति बुद्धि का बल लेता है।
हर एक व्यक्ति अपनी समझ का बल लेता है।
हर एक व्यक्ति अपनी सात्त्विकता का बल लेता है।
हर एक व्यक्ति अपने शिष्यों का बल लेता है।
हर एक व्यक्ति अपने ऐश्वर्य, प्रताप और शक्ति बल लेता है।
प्रभु का बल लेने वाला तो अबजों में एक होता है। **गुरुजी ऐसे एक व्यक्ति हैं।** मैं आपको बता रहा हूँ, सच मानना। मेरा स्वभाव नहीं है, किसी की प्रशंसा, बखान करना। हम खुले दिल से बात भी कर लेते हैं। **वो काकाजी का जीवंत चैतन्य का संकल्प मूर्तिमान है।**

गुरुजी की सेवा मत करो तो चलेगा, असेवा नहीं करना। ये तीर्थ ऐसा है कि बाहर पाप हो गया तो
इस तीर्थ में आने से,
सद्भाव रखने से टन, भर पाप हो गया—
कितना ही पाप हो गया हो—
मगर यह तीर्थ ऐसा है,
यह भजन की भूमि है,
यह पवित्रता की भूमि है,
वो निष्ठा की भूमि है,
ये चैतन्यभूमि है—
यह भूमि में आने वाले का पाप वहीं भस्म हो जाएगा। ऐसी तीर्थभूमि में आप सब आकर एक अद्भुत भक्ति अदा कर रहे हैं। आप लोगों को धन्यवाद !

दूसरी बात—बहनों का हार देखकर मुझे आनंद हुआ। मैं ये (पुस्तक) लेकर बैठा हूँ और गुरुजी आप सब को समझाएंगे। अभी बापू और भरत को मैंने कहा कि जो आमुख लिखा है उसकी तीन-चार जो लाईनें हैं—**'भूतकाल, भविष्य और वर्तमान'** इतनी अद्भुत लाईन है। वो हम सभी को वह वाक्य पकड़ कर रखना है। दूसरी बात गुरुजी समझाएंगे, गुरुजी ने कहा ही है कि मैं समझने वाला हूँ। उसमें बहुत अद्भुत रहस्यों का रहस्य दिया है।

तो, बहनों का हार आया—बहुत आनंद हुआ, बहुत खुशी हुई। एनाऊन्सर ने वो हार का रहस्य समझने का प्रयत्न भी किया। मुझे भी जँचा, बहुत आनंद हुआ। 63 के बीच में तिलक ! मुझे बहुत आनंद हुआ। दो भक्त आमने-सामने आ जाएं। बहनों ने जो उसका रहस्य बनाया। बहुत खुशी हुई। बीच में स्वामिनारायण का तिलक ! भगवान और संत ! हम एक-दूसरे का दर्शन करें प्रभु के भाव से। योगीजी महाराज हम युवकों को कहते थे—किसी को भी जय स्वामिनारायण बोलो—प्रभु के भाव से ! मैं स्वामिनारायण भगवान को जय स्वामिनारायण कहता हूँ—ऐसे भाव से कहना।

आपस-आपस में हम साथ में रहेंगे, कुटुंब-परिवार में रहेंगे, मंदिर में रहेंगे।
आपस में जब कभी ऐसा मन दुःख हो जाए,
बुद्धि से तर्क-विर्तक में डूब जाएं,
चित्त से और कोई चिन्तन हो जाए,
अहंकार से कोई अरुचि पैदा हो जाए—आपस-आपस में,
तो ये 63—एक साल तक डूब जाओ बस ! एक साल तक 63 !
एक साल दर्शन करो 63 सिर्फ-सिर्फ......अद्भुत बात बहनों ने बतलाई। मुझे बहुत-बहुत खुशी हुई........

हम लोग बैठे हैं—ताड़देव में, आप भी ताड़देव में; तो हम भी संकल्प करें—'63' थ्रू आऊट याद रखें। आपस-आपस में जो दर्शन करें तो प्रभु के भाव से। मस्तक नहीं झूकेगा तो चलेगा, मगर मन से तो झूकते ही रहना—बस ! एक साल तक हम ऐसे दिल से भजन करें, रात को प्रार्थना और स्वाध्याय करके सो जाएं। बहुत काफी है—बहुत काफी है। द्विशताब्दी महोत्सव में भजन का आनन्द आप प्राप्त करेंगे। यहां कोई बुरा विचार नहीं आए बीच में। एक आनंद प्राप्त होगा।
फिर प्रभु बुद्धियोग देंगे।
फिर इन्द्रियों को प्रभु अपने में डूबोएंगे।
फिर प्रभु गहराई देंगे।
फिर अंतकरण डूबोएंगे।
फिर मूर्ति का प्रागट्य—वह अलग चीज़ है।

तो जो हार बनाया मुझे बहुत खुशी हुई। मैं एक साल तक वो ही विचार में डूबने वाला हूँ। चलो बहनें भी गुरु तो बन गईं ! उन लोगों ने बहुत अच्छा मुझे भी मेसेज़ भेजा। मुझे भी बहुत आनंद हुआ।

.....एक सेन्टेन्स यह पुस्तक का मैं पढ़ लेता हूँ, बहुत समय हो गया है। सिर्फ एक सेन्टेन्स— 86' में 26 जनवरी को काकाजी ने जब प्रवचन किया था। मैं तो पास में बैठा था। जब वो सेन्टेन्स 'नकामा....' काकाजी ने निकाला तो उसी वख्त मैं खूब सोच विचार में डूब गया था। आज मैं फिर समझने का प्रयत्न करता हूँ। तीन-चार मिनिट के लिए। गुणातीत द्विशताब्दी को 'नकामा' प्रसंग कहना तो मेरे दिमाग में बैठा नहीं। गुणातीत द्विशताब्दी का उत्सव हमने मनाया।

वह मना कर हम गए 26 जनवरी को विद्यानगर–3 फरवरी का दिन मनाने के लिए। ये हमारी गुरुभक्ति ही थी। हम सब पहुँच गए थे। पर, जब काकाजी ने प्रवचन किया–'आ नकामा गुणातीत द्विशताब्दी और दूसरे उत्सव जब हम मनाते हैं तो मेहरबानी करके, मेहरबानी करके यह बात आगे से हमें नहीं करनी। धतींगवेड़ा नहीं करना।' अच्छी तरह से सुनना–मैं समझ रहा हूँ। मैं इतना सोच विचार में डूब गया था। एक उत्सव है–गुणातीत द्विशताब्दी महोत्सव; दूसरी ओर काकाजी के हृदय में से शब्द निकलना–ऐसा धतींग नहीं करना। मीन्स जिस प्रकार से हमने सेलिब्रेशन किया उसमें काकाजी अन्तर से राजी नहीं हुए। ऐसा मुझे महसूस हुआ। मैं काकाजी को पूछने वाला ही था। जब हम भोजन लेने के लिए साथ जायेंगे तो मैं अवश्य पूछने वाला था। मगर मेरे और काकाजी के लिए अलग व्यवस्था थी। मैं तो संतों के साथ चला गया, काकाजी अलग बैठे थे। मैंने सोचा पूछता हूँ–पूछता हूँ। फिर मैंने सोचा उसी वक्त समैया को धतींगवेड़ा नहीं कहा है। ऐसा कौन है जिसे गुणातीत द्विशताब्दी मनाने के लिए आनंद ना हो। साकार ब्रह्म का सनातन वो दिव्य स्वरूप ! जिस स्वरूप के साथ आत्मीयता करनी है–जो अपना ही स्वरूप है। गुणातीत अपना ही स्वरूप है। मैं गुणातीत, हरिप्रसाद नहीं हूँ, मैं अक्षरब्रह्म हूँ। वो मेरा शरीर है। उसके साथ ऐक्य करना है। वो गुणातीत द्विशताब्दी के लिए धतींगवेड़ा शब्द काकाजी के हृदय से निकला, तो मैंने सोचा कि ये फेस्टीवल में हम लोगों से मध्य 28 और 41 के मुताबिक सेवा नहीं हुई बस !

.... मध्य 28 और 41 गुरुजी के पास अच्छी तरह समझना–सेवा का वचनामृत। सेवा ही जीव का, जीवन ! मगर उपनिषद में कहा है–'सेवा धर्मो परम गहनो, योगीनाम प्यगम्यः ! बड़े-बड़े योगियों को भी सेवा का माहात्म्य समझ नहीं आया है। भगवान स्वामिनारायण ने बताया है कि सेवा किस प्रकार से होनी चाहिए।

एक अहोभाग्य से; मेरा बहुत बड़ा अहोभाग्य है।
ऐसी एक भावना से कि मेरे नसीब में ऐसी सेवा कहां से ?
मेरे नसीब में ऐसी सुवर्ण तक कहां से ?
दूसरी–भगवत्‌भाव से सेवा होनी चाहिए।
तीसरी–भगवत् प्रसन्नता से सेवा होनी चाहिए।
चौथी–भक्तियुक्त सेवा होनी चाहिए।
पांचवीं–अपनी आत्मा का कल्याण करने के लिए–
प्रदर्शन के लिए नहीं,
मान के लिए नहीं,
लोगों को रिझने के लिए नहीं।
सब प्रसन्न हो जाएं इसलिए भी नहीं।
मैं मेरी आत्मा की सिर्फ सेवा करने के लिए
और
छठा–निर्मानीभाव से मियांजी और रतनजी जैसी हम लोगों ने नहीं करी होगी
उसी वक्त–मन, कर्म, वचन से निर्दोषबुद्धि से तो नहीं करी होगी–

जिसके फलस्वरूप काकाजी को 'धतींगवेड़ा का' वो शब्द कहना पड़ा। काकाजी ने सेवा और भक्ति का मार्ग ताड़देव की धरती पर पहले से बहाया था। कोई भी व्यक्ति–दुश्मन हो, नास्तिक हो, अयोग्य हो, जिसके वर्तन में वो चोर हो, छुपी–सिक्रेट बात जानने के लिए आया हो, मगर काकाजी की विज़न में और मन बुद्धि के प्लेटफार्म पर उसके लिए एक ही भाव रहा था–तू मेरे लिए योगीजी महाराज का स्वरूप ! ये दर्शन हमें कहां से ? काकाजी को वो बात सिखानी थी। मध्य 28, 41, 63। हम लोगों ने उस समय वो नहीं किया होगा; आप लोग भी ध्यान रखना। सामान्य बात नहीं है। भजन, स्वाध्याय करना। वो 28, 41, 63 वचनामृत के लिए–मध्य की बात करता हूँ। **स्वाध्याय–भजन : मस्ट** ! महाराज और स्वामी, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी, महंतस्वामी, गुरुजी सबके चरणाविंद में एक ही प्रार्थना करता हूँ–ऐसा स्वाध्याय और भजन के लिए आप सबको बल बुद्धि दें और सच्ची सेवा का आनंद हर सेकण्ड में प्राप्त कर सको ऐसी प्रार्थना !

–प.पू. स्वामिजी

विज्ञप्ति

26 जनवरी '86 को प.पू. काकाजी द्वारा
गुणातीत समाज के नाम दिया अंतिम संदेश
हिन्दी व गुजराती दोनों भाषाओं में–
'मोती बिखरे चौक में'–'मोती वेराणां चौकमा'
पुस्तिका के रूप में
प.पू. गुरुजी की 63वीं जयंती निमित्त प्रकाशित किया गया है। गुरुहरि योगीबापा ने हमें उनसे अलग करके गुणातीत समाज की स्थापना किस हेतु को लेकर करी है। वह रहस्य प.पू. काकाजी ने इस संदेश में अपने अनोखे ढंग से समझना चाहा है।
तो, आईये–
उनके मर्म को समझ कर, उस पर अमल करने अग्रसर हों....
यह पुस्तिका
योगी डिवाईन सोसाईटी-दिल्ली, मुंबई व शिकागो के केन्द्रों से प्राप्त हो सकेगी।

प.पू. गुरुजी की जयंती निमित्त सभी केन्द्रों के उद्गार

13-3-2000

.....आज आपका प्रागट्य दिन है।
तो, गुणातीत ज्योत में बहनों ने
और
हमने पी. के. (प्रभु कृपा) में महापूजा करी है।
तुम तन-मन-धन और आत्मा से सुखी रहो ऐसी प्रार्थना करते हैं।
और
तुम पू. काकाजी और पू. योगी बापा की तरह ही गुणातीतभाव में रहते हो जाओ
काकाजी जैसी ही निर्दोषबुद्धि सभी में रहे ऐसी प्रार्थना और आशीर्वाद !
तुम्हारे ही पप्पा और ज्योति बहन
तथा गुणातीत ज्योत की बहनों के
जय स्वामिनारायण !

❖

धुलेन्डी, 2056

..... ब्र. स्व. शास्त्रीजी महाराज, ब्र. स्व. प.पू. योगीबापा का–
साकार उपासना प्रवर्ताने हेतु दिल्ली में मंदिर निर्माण करने का संकल्प–
प.पू. काकाजी ने आपके द्वारा साकार किया है......
गुरुभक्ति अदा करके आप सभी के लिए प्रेरणारूप बने हो
प.पू. काकाजी के स्वरूप में सभी के दिल में स्थापित हुए हो।
26 को प.पू. स्वामिजी के सान्निध्य में
आपका प्रागट्यपर्व मनाया जा रहा है तब
हम सभी की आपसे प्रार्थना है कि–
प.पू. काकाजी 'पंचयज्ञ' के रूप ऐसा बहुत कुछ
हमारे बिना मांगे परोस कर गए हैं।
तो, उसका पूरा आनन्द ले लेने की भूख
सब के दिल में उत्पन्न हो जाए–
ऐसा संकल्प करके प्रार्थना के साथ आशीर्वाद भेजना।
प.पू. स्वामिजी को भी यही प्रार्थना है।
सभी मुक्तों को भावभरे जय स्वामिनारायण के साथ–
आपके ही साथीदारों–
अश्विनभाई, शांतिभाई, सनंदभाई,
रतीभाई और जशभाई के अभिनंदन के साथ
जय स्वामिनारायण !

❖

दि. 26-3-2000, रविवार

मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय
गुणातीत समाज की जय

......आज आपका प्रागट्य पर्व !
खूब-खूब आनंद का दिन।
आपने प.पू. काकाजी द्वारा योगीजी महाराज को हमेशा सर्वदा आपके जीवन में कार्य में और वाणी में प्रगट किया।
साथ-साथ शरण में आए स्वामिश्रीजी के अल्प संबंध वालों को भी
प्रत्यक्ष का संबंध करवा कर
स्वामिनारायण धर्म की अनोखी अलख जगा रहे हो।
सभी के हृदय में आपने योगीरुप–काकाजी रुप अनोखा स्थान लिया है फिर भी–
हमेशा सभी के सेवक बन कर विचर रहे हो।
आपने दिल्ली-राजधानी में श्री ठाकुरजी
और
प्रत्यक्ष स्वरूपों को विराजमान करके
जो नवनिर्मित समाज का सर्जन किया है–
उसकी कल्पना करनी असंभव है।
पर,
जो भी मुक्त आपके यहां आकर
इस प्रासादिक भूमि के,
इस प्रासादिक मंदिर के,
इन प्रासादिक मुक्तों के,
और–
उससे भी अधिक,
आपके प्रासादिक दर्शन, स्पर्श, सेवा, समागम का जब लाभ लेता है
तभी ख्याल आता है कि
आपने बापाश्री और काकाजी को कैसे अमर किया है।
......आपके द्वारा भेजी अद्‌भुत ब्रह्मसूत्रों के समान
'मोती बिखरे चौक में' पुस्तिका मिली।
प.पू. काकाजी की दिव्य-परावाणी के समान
यह पुस्तिका का एक-एक मोती समान ब्रह्मसूत्र को
आपने आपके जीवन में गूंथ दिया है।
.....योगी बापा और काकाजी महाराज के जीवन का
मूल रहस्य यह था कि–
...... सभी संतों को भगतजी महाराज और जागास्वामी जैसे
तथा
शास्त्री जी महाराज जैसे बनाना है।
तो वह हमारे जीवन में सिद्ध हो जाए
और
गुणातीत समाज के हम सभी मुक्त
किसी भी तरह संप, सुहृद्‌भाव और एकता के
बंधन से बंध कर
हंसते-खेलते अक्षरधाम रुप होकर
उनकी खूब-खूब शोभा बढ़ाएं।
प्रार्थना है कि–
आज आपके प्रागट्य पर्व पर

सभी संत इन आशीर्वादों को झेल कर
आपकी तरह अखंड प्रभु को धारते हो जाएं,
व
उनकी रीति से प्रभु का काम करते हो जाएं
ऐसा स्पेश्यल संकल्प-
भजन-प्रार्थना-जपयज्ञ करके
खूब आशीर्वाद बरसाने की कृपा करना
यही-
लि. सदा सेवक साधु अक्षरविहारी के खूब ही
हेतपूर्वक जय स्वामिनाराण स्वीकारना !

❖

दि. 26 मार्च 2000

॥ स्वामिश्रीजी ॥

.....दिल्ली में प.पू. स्वामिजी के दिव्य सान्निध्य में आपका प्रागट्य दिन मना रहे हैं......
.....हमारा कार्यक्रम दिल्ली आने का तो था ही।
.....लेकिन संजोगवश मेरा कार्यक्रम बदलना पड़ा है
और
उसकी कसक केवल यह पत्र द्वारा दर्शानी अशक्य है।
......बापा और काकाजी.....इन दोनों अद्वितीय दिव्य विभूतियों के परिचय में हजारों मुक्त आए,
कईयों ने नज़दीक से देखा
सेवा करी,
आशीर्वाद भी पाए
लेकिन आपने तो कुछ अलग ही दर्शन किया है।
कईयों ने आंखों से देखा और मन से नापे,
आपने आंखों से दर्शन करे और मन से पाए,
दिल से चाहा और हृदय से धारण किया।
सो, जब-जब आप उनका वर्णन करते हो,
रहस्यदर्शन कराते हो
तब अनोखी स्मृति दिमाग पर छा जाती है,
दिल तरबतर हो जाता है।
प्रभु के मार्ग पर चले हुए मरजीये के पास तो मोती ही मिलते हैं ना ?
आप ऐसे मोती का चारा चुगने वाले राजहंस हो।
इसी लिए जो भी आपके संपर्क में आता है.....
छोटे-बड़े, नये-पुराने उन सभी को
कोई अलौकिक आत्मीयता का अनुभव होता है।
तो, आज आपके प्रागट्य दिन के प्रसंग पर
आप जैसे सत्पुरुष को पहचानने की अंतर की सूझ,
ऐसी दिव्य दृष्टि,
साधक के लिए सख्त मापदंडों की परखनली जैसी शिस्त और साधुता,
भक्तों में दिव्यभाव और रसबसता
और सबसे विशेष तो
समग्र सत्संग समाज भावात्मक एकता से एकाकार हो जाये इस हेतु की
गरज हम सभी में प्रगटे
ऐसा संकल्प और आशीर्वाद बरसाना
साधु निर्मलदास के
जय श्री स्वामिनारायण स्वीकारनाजी !

❖❖❖

फिर आई 'जपयज्ञ' की बेला—

हर साल की तरह
अब की बार फिर धून, भजन, कथावार्ता से
लाभान्वित होने के लिए
***15 मई 2000**, सोमवार से—**13 जून, 2000**, मंगलवार तक*
*रोज सुबह **6.30** से **8.15***
प.पू. गुरुजी के सान्निध्य में 'ताड़देव' में जपयज्ञ का कार्यक्रम रखा गया है।
हर्ष की बात है कि मुक्तों को इन दिनों का बेसब्री से इन्तज़ार रहता है।
तो,
मुंबई - गुजरात - पंजाब - हरियाणा - यू.पी. - राजस्थान
से
जो भी इस जपयज्ञ में भले थोड़े दिनों के लिए आने की इच्छा रखते हों;
वे यदि हमें पहले से सूचित कर पायें,
तो उनके ठहरने - करने की व्यवस्था कर रखने में हमें सुविधा होगी।

—योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	30.4.2000	रविवार	–	एकादशी, व्रत
(2)	दि.	4.5.2000	गुरुवार	–	प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जयन्ती
(3)	दि.	12.5.2000	शुक्रवार	–	श्रीहरि नौमी
(4)	दि.	14.5.2000	रविवार	–	एकादशी, व्रत
(5)	दि.	16.5.2000	मंगलवार	–	नृसिंह जयंती
(6)	दि.	30.5.2000	मंगलवार	–	एकादशी, व्रत

TO,

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY—DELHI
'Tardeo', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
B-351, Sect.-I, Rohini, Delhi-85
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393